अनुभवात्मक शिक्षण की एक नवाचारी पहल 'प्रेरणा'

प्रिया जौहरी*

अनुभव से सीखने की अवधारणा नई नहीं है। कई शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की प्रक्रिया में अनुभव की भूमिका को स्वीकार किया है। हाल में, शिक्षा में आए महत्वपूर्ण बदलावों ने अनुभवजन्य, ज्ञानात्मक और कौशल आधारित शिक्षा को महत्व दिया है। इस आवश्यकता को समझते हुए, विद्यार्थियों को अनुभवात्मक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से 'प्रेरणा' कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2024 में की गई है। 'प्रेरणा' भारतीय शिक्षा प्रणाली के सिद्धांतों एवं मूल्य-आधारित शिक्षा के दर्शन के प्रति एक सशक्त प्रतिबद्धता से प्रेरित कार्यक्रम है, जो 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध परंपराओं के प्रति सम्मान व "वसुधैव कुटुंबकम्" (विश्व एक परिवार है) की भावना को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकों तथा व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से मूल्यों को अनुभव करने तथा उन्हें आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है। 'प्रेरणा' कार्यक्रम का लक्ष्य केवल ज्ञान का प्रसार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्म-खोज की भावना को गहनता से बढ़ावा देना है। भारतीय समृद्ध सभ्यता के शाश्वत ज्ञान में निहित सिद्धांतों तथा आदर्शों को विद्यार्थियों में विकसित करना ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जाएगी, जिससे उनके व्यक्तित्व में प्रभावशाली नेतृत्व क्षमता के गुणों का विकास हो सके। इस लेख में 'प्रेरणा' कार्यक्रम की रूपरेखा के साथ-साथ इसके महत्वपूर्ण आयामों को समझने तथा विद्यार्थियों के अनुभवों को साझा करने का प्रयास किया गया है।

अनुभवात्मक ज्ञान कार्यक्रम की एक पहल 'प्रेरणा' को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय एवं संस्कृति मंत्रालय के सम्मिलित प्रयासों से नवोदय विद्यालय समिति द्वारा जनवरी 2024 में प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों तथा अध्यापकों को भी शामिल किया गया है। इस अनूठी पहल में कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी हिस्सा ले सकते हैं। 'प्रेरणा' स्कूल में सप्ताहभर चलने वाला कार्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों में तीन मौलिक विचारों को जाग्रत करने का प्रयास किया जाएगा। पहला, विद्यार्थी को स्वयं की पहचान हो, दूसरा, वह इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत को समझ सके और तीसरा, वे देश के विकास में अपना क्या योगदान दे सकते हैं आदि। इस कार्यक्रम की

* *पूर्व कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प./H-105 साउथ सिटी, रायबरेली रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226025

अवधि पाँच दिन है। यह एक आवासीय कार्यक्रम है, जो एक मॉडल स्कूल 'प्रेरणा स्कूल' में संचालित हो रहा है, जो गुजरात के मेहसाणा जिले के वडनगर (माननीय प्रधानमंत्री का गृहनगर) में स्थापित है। इस पहल का उद्देश्य देश के युवाओं को परिवर्तन का उत्प्रेरक बनने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस विद्यालय की स्थापना 1888 में 'वर्नाक्युलर स्कूल' के रूप में हुई थी। यह वडनगर की समृद्धि का प्रतीक है।

'प्रेरणा' कार्यक्रम — एक पहल

'प्रेरणा' कार्यक्रम भारत सरकार की 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत एक पहल है, जो *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के मूल सिद्धांत से प्रेरित है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति के प्रति सम्मान रखते हुए, देश की स्थानीय तथा वैश्विक संदर्भ में आवश्यकताओं को पूरा करने की अनुशंसा करती है। इस नीति का उद्देश्य व्यक्तियों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार तथा वैज्ञानिक चिंतन के साथ कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा, सहानुभूति, साहस एवं लचीलापन हो। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का एक मुख्य उद्देश्य भारतीय जड़ों तथा गौरव से बंधे रहना है, इसलिए यह भारत की समृद्ध, प्राचीन और आधुनिक संस्कृतियों, ज्ञान प्रणालियों तथा परंपराओं को शिक्षा में सम्मिलित करने और उससे प्रेरणा लेने पर बल देती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों में प्रायोगिक एवं अनुभवात्मक अधिगम को अपनाने पर बल देती है जिससे विद्यार्थी स्वयं करके सीख सकें। विषय को सजीव बनाने के लिए उनमें कला एवं खेल को एकीकृत किया जाए। कहानी आधारित शिक्षणशास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षणशास्त्र के रूप में समावेशित करने की आवश्यकता है। जिससे न केवल कक्षा आनंदपूर्ण बनेगी, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति का शिक्षण में समावेशन से भारतीयता से बच्चों का परिचय हो सकेगा। इस उपागम से शिक्षा और संस्कृति के परस्पर संबंधों को दृढ़ता मिलेगी।

विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुसार शिक्षा ऐसी हो, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी भारतीय होने पर गर्व करें। विद्यार्थियों में उन ज्ञान, कौशलों, मूल्यों तथा स्वभाव को विकसित किया जाए, जिससे वे सतत विकास और जीवन के वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध हो सकें। इसलिए इस रूपरेखा का लक्ष्य शिक्षा में भारतीय संस्कृति तथा भारतीय विचार को सशक्त करना है। जिसमें प्राचीन विरासत से लेकर आधुनिक काल तक, शिक्षा और उसके उद्देश्यों का एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करना है। भारतीय विचारधाराओं का जीवंत ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण शिक्षा को एक नया आयाम प्रदान कर सकता है, जिसमें गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति का मूल है, इस शिक्षण व्यवस्था में संवाद और चर्चा की परंपरा रही है। स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए, भारतीय और स्थानीय भौगोलिक संदर्भ को आधार बनाते हुए शिक्षण करना है। देश के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में भारतीयों के योगदान का समृद्ध इतिहास पूरे पाठ्यक्रम में शामिल हो, जिससे न केवल विकास हो बल्कि गौरव और आत्मविश्वास भी समृद्ध हो सके। विद्यार्थी अपने आस-पास के पर्यावरण से सीख सकते हैं। आस-पास के उपलब्ध अध्ययन के स्रोतों का समृद्ध उपयोग, कहानियाँ,

कला, खेल, उदाहरण एवं समस्याओं का प्रयोग करके सीखने को रोचक और अनुभवजन्य बनाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी विद्यालय में सीखी गई बातों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों में लागू कर पाएँ। शिक्षा में माता-पिता और समुदाय की भागीदारी होना अति आवश्यक है। अतः इस रूपरेखा की मान्यता है कि भारतीय अवधारणाओं और प्रथाओं के माध्यम से नैतिकता को बढ़ावा दिया जाए ताकि विद्यार्थी समाज, मानवता, सभी प्राणियों के प्रति करुणा, विविधता, सेवा, स्वच्छता इत्यादि की भावना को समझ सकें।

'विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' के अनुरूप ही 'प्रेरणा' कार्यक्रम भारतीय विद्यार्थियों को भारतीय एवं आधुनिक ज्ञान से जोड़ता है। 'प्रेरणा स्कूल', विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण से सीखने का एक अवसर है, जिसमें विद्यार्थी आस-पास के उपलब्ध अध्ययन के स्रोत, कहानियों, कला, खेल, यात्रा, चर्चा आदि का उपयोग करके आपसी सहयोग से सीख सकते हैं। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है, सकारात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है और समुदाय के सदस्यों को साझा उत्थान के लिए प्रोत्साहित भी करता है। इसके द्वारा नई शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार, प्रेरणा कार्यक्रम भारतीय समाज के उत्थान और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक व भाषायी एकता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। अलग-अलग राज्यों तथा क्षेत्रों के विद्यार्थियों के बीच भाषायी और सांस्कृतिक समानता को बढ़ावा देकर, सामूहिक उत्थान एवं सामूहिक समृद्धि को प्रोत्साहित किया जाता है, जो 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

'प्रेरणा' कार्यक्रम में विद्यार्थियों को न केवल विचारक बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, बल्कि निर्णय लेने और समूह निर्माण के बारे में भी सिखाया जाता है। इस पहल के अंतर्गत वे वास्तविक जीवन के नायकों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझेंगे, जिन्होंने जीवन मूल्यों एवं राष्ट्रहित को अपने जीवन में अपनाकर कैसे देश और दुनिया में सार्थक परिवर्तन लाने में योगदान दिया है। 'प्रेरणा' कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों के पास प्रमाणपत्र के साथ-साथ सार्थक अनुभव होगा, जिसे वे अपने जीवन में सकारात्मक रूप से उपयोग कर सकेंगे। कार्यक्रम में भाग लेने और विविध जानकारी प्राप्त करने के बाद, प्रतिभागी अपने विद्यालयों में वापस जाने के बाद 'प्रेरणा' में सीखे गए मूल्यों और अनुभवों को अन्य विद्यार्थियों और समुदाय के साथ साझा करने का प्रयास करेंगे, जिससे सकारात्मक परिवर्तन आएँगे और अन्य विद्यार्थी भी प्रेरित होंगे। इस प्रकार सुस्पष्ट है कि कार्यक्रम की गतिविधियों में भाग लेने से युवाओं में अपने राष्ट्र के प्रति गौरव और नागरिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ उद्यमशीलता की भावना भी पैदा होगी जिससे भारत की असीम विविधता में अंतर्निहित एकता के साथ-साथ 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के प्रति सम्मान को बढ़ावा मिलेगा।

'प्रेरणा' कार्यक्रम की कार्यप्रणाली

इस कार्यक्रम की पद्धति शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है, जो आनंदमय अनुभवात्मक

शिक्षा पर केंद्रित है। सुपरिभाषित शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए 'प्रेरणा' कार्यक्रम में विभिन्न गतिविधियों को एकीकृत किया गया है, जैसे — फिल्में दिखाना, कहानी सुनाने की कला, विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय खेलों में भाग लेना और उनके बारे में सीखना, कार्यशील रेडियो मॉडल तैयार करना, कंप्यूटर डिजाइन कौशल सीखना, चित्र बनाना, पानी के नमूनों का निरीक्षण करना, 3-D प्रिंटिंग, ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीकी जानकारी, शैक्षिक भ्रमण आदि। विद्यार्थियों के लिए सहयोगात्मक शिक्षण विधियाँ और उन्नत प्रौद्योगिकी तथा सक्रिय और रुचिकर शैक्षिक अनुभव सुनिश्चित करते हुए इस कार्यक्रम में सामुदायिक संवाद पर विशेष बल दिया गया है, जिससे अधिगम हेतु वास्तविक दुनिया के संदर्भों का निर्माण किया जा सके। बच्चों को समझ और उनकी क्षमता को उन्नत करने के लिए इस कार्यक्रम में चित्रकला, पॉडकास्ट, ब्लॉग, 3-D प्रिंटेड मॉडल तथा अन्य माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। 'प्रेरणा' कार्यक्रम में अध्यापकों को आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करने, विभिन्न शिक्षा प्रणालियों को लागू करने, चिंतन व फीडबैक के माध्यम से निरंतर सुधार को बढ़ावा देने के महत्व को भी रेखांकित किया गया है।

कार्यक्रम के लिए प्रतिभागियों का चयन

'प्रेरणा' कार्यक्रम में प्रतिभागियों का चयन एक सरल तीन-चरणीय प्रक्रिया के द्वारा किया जाता है। 'प्रेरणा' कार्यक्रम के प्रत्येक बैच में 10 अलग-अलग जिलों से कुल 20 विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। इस चयन प्रक्रिया में उत्साहित एवं प्रेरित विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जाती है। इन विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, रचनात्मकता, संचार कौशल एवं सामाजिक दायित्व जैसी विशेषताएँ हों। इस संपूर्ण चयन प्रक्रिया का उद्देश्य ऐसे विद्यार्थियों का चयन करना है, जो कार्यक्रम से अधिकतम लाभ उठा सकें और कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। विद्यार्थी को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए व्यक्तिगत जानकारी, विद्यालय तथा विशेष उपलब्धियों के विवरण के साथ 'प्रेरणा' पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण करना होता है। विद्यार्थियों का पंजीकरण prerana.education.gov.in. पोर्टल पर किया जाता है। यदि किसी विद्यार्थी को कोई चिकित्सीय समस्या है या कोई दवा ली जा रही है तो जानकारी आवेदन पत्र में देना आवश्यक है। चयन प्रक्रिया के चरण इस प्रकार हैं —

पहला चरण — विद्यालय स्तर पर चयन

प्रत्येक जिले से कक्षा 9वीं से 12वीं तक अध्ययनरत विद्यार्थियों में से एक सर्वश्रेष्ठ छात्रा एवं एक सर्वश्रेष्ठ छात्र का चयन किया जाता है। यह चयन विद्यालय द्वारा विद्यार्थी के पिछले प्रदर्शन, अध्यापकों की अनुशंसा और विद्यार्थियों की उपलब्धियों के आधार पर किया जाता है।

दूसरा चरण — जिला स्तरीय 'प्रेरणा' उत्सव

दूसरे चरण के अंतर्गत जिला स्तर पर जवाहर नवोदय विद्यालय (जे.एन.वी.) में एक 'प्रेरणा' उत्सव का आयोजन किया जाता है। पहले चरण में चयनित विद्यार्थी इस उत्सव में भाग लेते हैं। उत्सव के दौरान, विद्यार्थी को मुझे 'प्रेरणा' के लिए क्यों चुना जाना चाहिए या 'माई विजन ऑफ इंडिया/2047' आदि पर अपनी अभिव्यक्ति प्रदर्शित करनी होती है। प्रत्येक विद्यार्थी को दिए गए विषय पर निबंध,

कविता, कहानी, गीत लिखना या चित्र बनाना जैसी एक प्रतिभा प्रदर्शन गतिविधि में भाग लेना होता है। इन गतिविधियों के प्रदर्शन के आधार पर तथा उनकी कार्यक्रम के लिए उपयुक्तता के मूल्यांकन के माध्यम से 30 विद्यार्थियों (15 लड़के और 15 लड़कियों) का चयन किया जाता है।

तीसरा चरण — व्यक्तिगत साक्षात्कार

जिला स्तरीय 'प्रेरणा' उत्सव में चयनित 30 विद्यार्थियों का व्यक्तिगत साक्षात्कार जवाहर नवोदय विद्यालय (जे.वी.एम.) में होता है। साक्षात्कार का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, जुनून एवं कार्यक्रम में भाग लेने की उनकी इच्छा का आकलन करना है। अंत में, प्रत्येक जिले से अंतिम रूप में दो विद्यार्थियों (एक लड़का और एक लड़की) का चयन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक जिले से दो अतिरिक्त विद्यार्थियों (एक लड़का और एक लड़की) को बैकअप के रूप में चयनित किया जाता है।

अंतिम रूप से चयनित विद्यार्थियों को आवेदन ईमेल द्वारा सूचित किया जाता है। यदि कोई विद्यार्थी तकनीकी समस्या के कारण आवेदन करने में असमर्थ है तो वह जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय से संपर्क कर आवेदन कर सकता है।

प्रतिभागियों की पूर्व तैयारी

'प्रेरणा' कार्यक्रम में स्वयं को पूरी तरह से शामिल करने के लिए, चयनित विद्यार्थियों को सुझाव दिया जाता है कि वे अपने प्रदेश या जिले की लोककथाएँ या गीत या फिर प्रार्थना अथवा लोक नृत्य, भाषा, प्रेरणादायक व्यक्तित्वों की जानकारी, देशी भाषा की कुछ रोचक कहावतें या वाक्यांश, स्वदेशी खेल आदि की तैयारी करें। इसके अतिरिक्त, वे अपने साथ स्थानीय कला या शिल्प का नमूना, एक स्थानीय नुस्खा या खाद्य पदार्थ, राज्य या क्षेत्र की पारंपरिक वेशभूषा तथा राज्य या जिले के विभिन्न स्थलों की तस्वीरों की सॉफ्ट कॉपी ला सकते हैं।

'प्रेरणा' कार्यक्रम के मार्गदर्शक

'प्रेरणा' कार्यक्रम के मार्गदर्शक का चयन नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय और विशेषज्ञों के समूहों में से किया जाता है। मुख्य रूप से आठ सलाहकारों का चयन किया जाता है, जिनमें सम्मिलित हैं।

- शिक्षाविद — अनुभवी अध्यापक तथा विद्यालय प्रशासक, जो शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थियों की जरूरतों को गहराई से समझते हैं।
- मनोवैज्ञानिक — बाल विकास तथा किशोर मनोविज्ञान में विशेषज्ञ, जो विद्यार्थियों को प्रेरित करने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए प्रभावी रणनीति विकसित करने में मदद कर सकते हैं।
- प्रेरक वक्ता — विभिन्न क्षेत्रों के प्रेरक व्यक्तित्व, जो अपनी कहानियों और अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं।
- विषय विशेषज्ञ — विभिन्न विषयों में विशेषज्ञ, जो विद्यार्थियों को उनकी रुचि के क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।
- करियर परामर्शदाता — विद्यार्थियों को उनके करियर के लक्ष्यों को निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने के लिए योजना बनाने में मदद करने के लिए विशेषज्ञ।

अध्यापकों में क्षमता निर्माण के लिए गांधीनगर में तीन दिन आवासीय कार्यक्रम का आयोजन

किया जाता है, जिसमें अध्यापकों को अनुभवात्मक तरीकों से प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। मेंटर्स को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आई.आई.एम. अहमदाबाद, भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के विशेषज्ञों को सम्मिलित किया गया है।

कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में गतिविधियों की सूची

प्रेरणा विद्यालय का पाठ्यक्रम भारत की समृद्ध सभ्यता के कालातीत ज्ञान पर आधारित है। जिसमें नौ मूल्यों को सम्मिलित किया गया है, जैसे—स्वाभिमान एवं विनय, शौर्य एवं साहस, परिश्रम एवं समर्पण, करुणा और सेवा, विविधता एवं एकता, सत्यनिष्ठा और शुचिता, नवचार एवं जिज्ञासा, श्रद्धा और विश्वास, स्वतंत्रता एवं कर्तव्य। इन मूल्यों पर आधारित कक्षाएँ विद्यार्थियों के समन्वित विकास को बढ़ावा देंगी। इस पाठ्यक्रम को आई.आई.टी., गांधीनगर द्वारा तैयार किया गया है। इसलिए 'प्रेरणा' कार्यक्रम की कक्षाएँ नौ विषयों पर आधारित होती है, जो गतिविधि-आधारित शिक्षा के माध्यम से आनंदमय और सार्थक अधिगम के लिए विशिष्ट अवसर प्रदान करती हैं। इस कार्यक्रम में दिवस-वार कार्यक्रम और गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों के प्रत्येक दिन की शुरुआत सचेतनता एवं ध्यान के लिए योग तथा प्राणायाम से होती है। नाश्ते के सत्र में कुछ मिशन लाइफ गतिविधियों को शामिल किया गया है, जो सतत विकास पर केंद्रित हैं। इन गतिविधियों के बाद, प्रत्येक सत्र में अलग-अलग मूल्य विषय (विषयों) के साथ अनुभवात्मक शिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके उपरांत शाम की गतिविधियों में नौका चालन, हेरिटेज वॉक, साइट विजिट, संगीत सत्र, फिल्म स्क्रीनिंग तथा चर्चाएँ, विद्यार्थियों का प्रतिभा प्रदर्शन, स्वदेशी खेल, विज्ञान और खेल गतिविधियाँ, कहानी सुनाना आदि सम्मिलित हैं। कार्यक्रम में 10 दैनिक स्तंभ हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

- मूल्य शिक्षा— विस्तृत पाठ्यपुस्तक सामग्री
- प्रेरक कहानियाँ — उदाहरण और अन्य प्रासंगिक वास्तविक जीवन की कहानियाँ
- व्यक्तिगत चिंतन— विद्यार्थियों के जीवन में उदाहरण
- हाथ की गतिविधि
- प्रस्तुति— दिनभर की सीख का संकलन
- वडनगर कहानियाँ या स्थानीय कहानियाँ
- वीडियो— प्रेरक और प्रासंगिक लघु वीडियो तथा फिल्में देखना
- लॉगबुक— प्रश्नों का उत्तर देना एवं विचार लिखना
- विचारोत्तेजक प्रश्न— दिन में प्रस्तुत किए गए विषय का गहन चिंतन
- प्रोग्राम के उपरांत— सीख घर तक ले जाना

अन्य गतिविधियाँ

- **धैर्य और साहस एक साथ हों**— स्वतंत्रता संग्राम के नायकों के इतिहास से हमें धैर्य और साहस की शिक्षा मिलती है, जब भी हम उनके बारे में सुनते हैं व पढ़ते हैं तो हम साहस और उनकी बहादुरी को देखकर गर्व से भर जाते हैं। जब भी हम विपरीत परिस्थितियों में होते हैं तो

हम उनके साहस, खतरे का सामना करने की इच्छा तथा क्षमता एवं दृढ़ संकल्प को याद करते हैं और ये सोचते हैं कि कैसे उनके महान साहस एवं धैर्य ने भारत को एक स्वतंत्र देश बना दिया। इस प्रकार के उद्धरण से विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए तो विद्यार्थियों में धैर्य और साहस का विकास हो सकेगा। 'प्रेरणा' कार्यक्रम में इस गतिविधि के अंतर्गत विद्यार्थी रुबिक क्यूब, स्ट्रिंग्स, बिंदी, स्टीरियोग्राफिक प्रॉजेक्शन, 3D प्रिंटर तथा लेजर कटर मशीन का प्रयोग करके महान नायकों, जैसे—सरदार पटेल, भगत सिंह, डॉ. अम्बेडकर, महात्मा गाँधी आदि के चित्रों को निर्मित करेंगे और उनके जीवन से धैर्य एवं साहस की प्रेरणा लेंगे।

- **परिश्रम और समर्पण का जोड़**— भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए भारतीय जनता द्वारा किया गया एक महान और ऐतिहासिक संघर्ष था। देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष के साथ-साथ अपने हाथ से बने सूती खादी के कपड़े बनाकर ब्रिटिश उत्पादित कपड़ों का बहिष्कार किया तथा सम्पूर्ण रूप से भारत को आत्मनिर्भर और स्वदेशी बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज का भारत स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण में और आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक प्रयास कर रहा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने और देश की युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भरता का ज्ञान देने के लिए चरखे का उपयोग किया जा सकता है, जिससे वह चरखे से अपना धागा बनाने की कला सीख पाएँगे और आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर हो सकेंगे। परिश्रम तथा समर्पण की गतिविधि विद्यार्थियों को ज्ञान देगी कि परिश्रम और समर्पण से जीवन में महान से महान लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।
- **आओ यात्राओं से सीखें**— 'प्रेरणा' कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों को झील, उद्यान, पुरातात्विक स्थल की यात्रा पर ले जाते हैं, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो सके। विद्यार्थी यात्रा से पूर्व कुछ गतिविधियाँ करेंगे, जैसे—कीड़ों, वनस्पतियों, वन्यजीव समूह और समुद्री जीवन में अब तक उनके द्वारा देखी गई प्रकृति, विविधता की सूची निर्मित करना आदि। यात्रा के बाद की गतिविधियों में यात्रा के बाद देखी गई विविधता की सूची बनाएँगे। इसके उपरांत वे दोनों सूचियों की तुलना कर सकते हैं और ये समझ सकते हैं कि इनमें क्या भिन्नता थी आदि। ये सभी गतिविधियाँ सांकेतिक हैं। इससे विद्यार्थियों के बीच विचारोत्तेजक चर्चाएँ होंगी, जो उनके समग्र विकास के उद्देश्य तथा ज्ञान के आदान-प्रदान में सहायक सिद्ध होंगी। पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण के अतिरिक्त, विद्यार्थी चयनित शिक्षक सलाहकारों के द्वारा प्राचीन भारतीय सभ्यता, विश्व की शीर्ष पाँच अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने और चंद्रमा पर चंद्रयान-3 जैसे विषयों का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्रतिभागियों के अनुभव

'प्रेरणा' कार्यक्रम के पायलेट चरण का आरंभ 15 जनवरी 2024 से लेकर 17 फरवरी 2024 तक किया गया। पहले चरण के तहत पाँच राज्यों

हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और एक केंद्र शासित प्रदेश दमन और दीव से प्रतिभागियों का चयन किया गया था। इस कार्यक्रम के छठे बैच का आरंभ 15 अप्रैल 2024 से किया गया। अब तक के आयोजित किए गए बैचों में भाग लिए गए विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए हैं। विद्यार्थियों से मिली प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के अनुसार यह एक प्रकार का अद्भुत अनुभव था, जिसमें उन्हें न भूलने वाले अनुभव मिले। गुजरात बैच के विद्यार्थियों के अनुसार इस कार्यक्रम के दौरान नए प्रकार का सीखने का अनुभव प्राप्त हुआ, इसके साथ ही उन्होंने कई प्रकार के कौशलों की जानकारी भी प्राप्त की। विद्यार्थियों ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम आनंद अनुप्रयोगों से भरपूर था। उनके सभी शिक्षक बहुत ही विनम्र थे। विद्यालय में जो भी सुविधाएँ प्रदान की गईं वे सभी उनके लिए शानदार तथा आरामदायक थी। हम इस कार्यक्रम के तहत एक परिवार बन गए थे। अन्य विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम के दौरान उन्हें जीवन जीने के कई मूल्य सीखने को मिले। विद्यालय में कई गतिविधियों में चरखा बनाने की गतिविधि रोचक थी, यह एक उत्कृष्ट अनुभव था। विद्यार्थियों ने बताया की 'प्रेरणा' स्कूल के अंदर उन्हें अन्य राज्यों के बारे में जानने तथा विभिन्न कलाकृतियों को देखने का अद्भुत अवसर मिला।

निष्कर्ष

'प्रेरणा' कार्यक्रम एक नया विचार है और पारंपरिक शिक्षण के विपरीत एक नवाचारी अवधारणा है, जो इस तथ्य को स्वीकार करती है कि शिक्षा पाठ्यपुस्तकों तथा कक्षाओं के परे भी है। इस प्रायोगिक शिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य इतिहास का नवाचार से और परंपरा का भविष्य से संबंध स्थापित करना है। इस कार्यक्रम में योग, ध्यान सत्रों से लेकर सीखने की रचनात्मक गतिविधियों, विषयगत कार्यशालाओं और ऐतिहासिक स्थलों के दौरे करना आदि कार्यक्रम शामिल हैं, जो विद्यार्थियों को सीखने के लिए समग्र दृष्टिकोण को सुनिश्चित करता है। 'प्रेरणा' विद्यार्थियों को स्वदेशी ज्ञान से लेकर अत्याधुनिक तकनीकी तक विभिन्न ज्ञान प्रणालियों से जुड़ने का एक सफल प्रयास है, जो इसे सभी अन्य योजनाओं से अलग बनाता है।

इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरक व्यक्तित्वों तथा गुरुओं से सीखने का अवसर भी मिलता है, जो उन्हें भविष्य में मौलिक कार्य करने के लिए प्रेरक तत्व के रूप में सहायक होगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए, जिससे वे इसमें भाग लें और अपनी आत्म-खोज की यात्रा को प्रारंभ कर सकें। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए यह आवश्यक है कि समय-समय पर इसके सीखने के प्रतिफलों की समीक्षा की जाए। जो विद्यार्थी 'प्रेरणा' कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं वे अधिक से अधिक विद्यार्थियों के बीच अपने ज्ञान की यात्रा और अनुभवों को साझा करें, तभी यह प्रयास सफल होगा। अध्यापक और विद्यालय प्रशासन, विद्यार्थियों को प्रत्येक आवश्यक सहायता प्रदान करें, जिससे कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित की जा सके।

संदर्भ

30 जनवरी, 2024 को https://prerna.aicte-india.org/social-board/detail.php?id=1 से प्राप्त किया गया.

15 मार्च, 2024 को https://prerna.aicte-india.org/social-board/detail.php?id=15 से प्राप्त किया गया.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2023. विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 5 जनवरी, 2024 को https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf से प्राप्त किया गया.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली. 1 जनवरी, 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया.

शिक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय. 2024. प्रेरणा—एक अनुभवात्मक ज्ञान कार्यक्रम 2024. शिक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. 7 जनवरी, 2024 को https://prerana.education.gov.in/ से प्राप्त किया गया.

———. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=199318810 जनवरी, 2024 को प्राप्त किया गया.